सखियो मली संघात, सोभित चांदनी रात।
तेज भूखण अख्यात, मीठे स्वरे बाज री।। २ ।।

सब सखियां एक साथ मिलीं। सुन्दर चन्द्रमा की छटकती चांदनी रात है। सुन्दर आभूषणों की लुभावनी मीठी-मधुर आवाज आ रही है।

जोतां जोत वृंदावन, अंगे रंग उतपन।
सामग्री सखी जीवन, नवलो सर्वे साज री।। ३ ।।

वृन्दावन की शोभा देखकर अंग में मस्ती है। सम्पूर्ण जोगबाई नई सजी हैं। सखियां, वालाजी और वृन्दावन सब नई शोभा से सजे हैं।

अंगे सहु अलवेल, करे रे रंगना रेल।
विलास विनोद हांस खेल, लोपी रमे लाज री।। ४ ।।

सखियां लाज-शर्म छोड़कर अपने मस्ती से भरे अलमस्त अंगों से आनन्द, विनोद तथा हंसी का खेल खेलती हैं।

वचे वचे वाए वेण, रंग रस खिण खिण।
उपजावे अति घण, पूरवा पूरण काज री।। ५ ।।

बीच-बीच में वालाजी बांसुरी बजाते हैं और पल-पल में हम सबकी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए आनन्द बढ़ाते हैं।

रमवुं उनमदपणे, वालाजी सूं रंग घणे।
कर कंठ धणी तणे, विलसूं संगे राज री।। ६ ।।

सखियों ने मन में विचारा कि आज वालाजी के गले में हाथ डालकर मस्ती के साथ आनन्द भरी रामत खेलेंगे।

वाणी तो बोले मधुर, करसूं ग्रही अधुर।
पिए वालो भरपूर, राखी हैडा मांझ री।। ७ ।।

वालाजी मीठी-मीठी बातें बोलकर सखियों को हाथ से खींचकर, हृदय से चिपटाकर अधरामृत का पान करते हैं।

रमती इंद्रावती, घातो घणी ल्यावती।
वालैया मन भावती, मुखमां मरजाद री।। ८ ।।

मर्यादा (लाज-शर्म) रखते हुए अनेक दावपेंच से, जो धनी मन भावे श्री इन्द्रावतीजी खेलती हैं।

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। ४३३ ।।

राग धन्यासरी

वालैयो रमाडे रे, अमने नव नवे रंग।
जेम जेम रमिए रे, तेम तेम वाधे रे उमंग।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, वालाजी हमको नए-नए आनन्द के साथ रामतें खिलाते हैं। हम जैसे-जैसे खेलती हैं, वैसे-वैसे ही हमारे मन में उमंग बढ़ती है।

Nijanand App

सकल मलियो रे साथ, सोभे वालैया संघात।
जाणिए उदयो प्रभात, तिमर भाजियो रात, सोहे वृंदा रे वन।। २ ।।

सब सखियां वालाजी के साथ मिलकर शोभा बढ़ाती हैं, ऐसा लगता है मानो सुहावने वृन्दावन में सवेरा हो गया है और रात्रि का अन्धकार मिट गया है। इस तरह से वृन्दावन की शोभा है।

भूखण झलहलकार, नंग तो तेज अपार।
जोत तो अति आकार, वस्तर सोहे सिणगार, मोहे वालो रे मन।। ३ ।।

सखियों के आभूषण जगमगा रहे हैं, उनके नगों का तेज अपार है। उनके सुन्दर श्रृंगार से उनके स्वरूप इतने मनमोहक हो गए हैं कि वालाजी उन पर फिदा हो जाते हैं।

सिणगार सर्वे सोहे, वालोजी खंत करी जुए।
जाणिए मूलगां रे होय, तारतम विना नव कोय, जाणें एह रे धन।। ४ ।।

सखियों के सम्पूर्ण श्रृंगार को वालाजी बड़ी चाह से देखते हैं। उन्हें लगता है कि इनकी (सखियों की) शोभा ब्रज से ही है। अब जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान के द्वारा यह पता चला कि रास में योगमाया के तन थे, कालमाया के नहीं।

वालोजी अति उलास, मन मांहें रलियात।
पूरवा सुंदरीनी आस, मरकलडे करे हांस, उलट उतपन।। ५ ।।

वालाजी बड़ी उमंग के साथ मन में प्रसन्न हैं और सखियों की आशा पूरी करने के लिए मुस्कराकर सबको हंसाते हैं और उमंग पैदा करते हैं।

सुख तो वालाजीने संग, अरधांग लिए रे अंग।
जुवती करती जंग, रमे नव नवे रंग, घणूं जसन।। ६ ।।

वालाजी सब सखियों को अपने अंग से लिपटाते हैं। सखियां भी नए-नए तरीकों से प्रसन्नता के साथ खेलती हैं, जिससे उल्लास और बढ़ जाता है।

सुंदरी वल्लभ बंने, करे इछा मन गमे।
रीस तो कोए न खमे, नीच तो भाखे न नमे, बोले बल तन।। ७ ।।

सखियां और वालाजी अपने मन की इच्छानुसार खेलते हैं। खेल में कोई हल्की भाषा नहीं बोलता है, न किसी को झुकना ही पड़ता है। गुस्सा किसी को आता ही नहीं, जबकि दोनों अपनी-अपनी शक्ति से बोलते हैं।

चालती चतुरा रे चाल, मुख तो अति मछराल।
सोहंती कट लंकाल, चढती जाणे घंटाल, प्रेम काम सिंध।। ८ ।।

सखियां बड़ी चतुराई वाली चाल चलती हैं। उनके मुख मस्ती से भरे हुए हैं। उनकी पतली कमर शोभा देती है। श्रृंगार में लहंगे का घेरा नीचे बड़ा तथा कमर में पतला (घण्टे की तरह शोभित है) मस्ती भरे प्रेम और काम से भरे हुए समुद्र के समान दिखाई देता है।

छेलाइए अति छेल, वल्लभ संघाते गेहेल।
प्रेम तो पूरो भरेल, स्याम संगे रंग रेल, वाले बांहोंडी रे बंध।। ९ ।।

चतुराई दिखाने में अति चतुर हैं। पिया जी के साथ दीवानी बनी हैं और पिया के गले में बांहें डालकर भरपूर रंगरेलियां मना रही हैं।

Nijanand App

वाणी तो बोले विसाल, रमती रमतियाल।
कंठ तो झाकझमाल, अंग तो अति रसाल, सोहंती रे सनंध।। १० ।।

खेल-खेल में ऊंचे स्वर से गाती हैं। गले की आवाज रसीली है। काम से भरे अंग की शोभा लुभावनी है।

गावती सुचंग रंग, आणती अति उमंग।
स्वर एक गाय संग, अलवेली अति अंग, वास्नाओ सुगंध।। ११ ।।

मधुर रंग में उमंग भरकर सब सखियां एक स्वर में मिलकर गाती हैं और सब वातावरण आनन्द से खुशबूदार हो जाता है।

वल्लभ कंठ वलाय, लिए रंग धाय धाय।
रामत करे सवाय, पाछी नव राखे काय, ऊभी रहे रे उकंध।। १२ ।।

सखियां वालाजी से कहती हैं, हे वालाजी! खड़े रहो। वह दौड़-दौड़ कर आती हैं। वालाजी के गले में हाथ डालकर उनसे भी बढ़-चढ़कर खेलती हैं। उस समय अंग को भी नहीं संभाल पातीं।

इंद्रावती अंगे आप, वालाजीसुं करे विख्यात।
मुखतो मेले संघात, अमृत पिए अघात, सुख तो लिए रे सुन्दर।। १३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी अपने धनी से अंग मिलाकर चुम्बन द्वारा अधरों का अमृत पीकर तृप्त होती हैं। बड़े मन-मोहक और सुन्दर खेल का सुख लेती हैं।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ४४६ ।।

राग श्री कालेरो

आवोरे सखियो आपण हमची खूंदिए, वालाजीने भेला लीजे रे।
रामत करतां गीतज गाइए, हांस विनोद रंगडा कीजे रे।। १ ।।

आओ री सखियो! वालाजी के साथ में उछलते हुए खेलें। खेलते समय हंसी और विनोद के साथ गीत गाएं।

मारा वालैया ए रामत घणूं रूडी, हमचडी रलियाली रे।
कालेरामां कंठ चढावी, गीत गाइए पडताली रे।। २ ।।

हे वालाजी! यह खेल बहुत अच्छा है। मस्ती से भरा है और सुहावना है। ऊंचे स्वर में गाएं तथा हाथ की ताली बजाएं।

हमचडीनो अवसर आव्यो, आगे कह्यूं नहीं अमे तमने रे।
एवो समयो अमने क्यांहे न लाधो, हामडी रहीती अमने रे।। ३ ।।

अब हमारी चाह को पूर्ण करने का समय आ गया है। हमने इससे पूर्व कभी आपसे नहीं कहा। ऐसा समय भी पहले कभी मिला नहीं था और इसलिए हमारी इच्छा बाकी थी।

जे रस छे वाला हमचडीमां, ते तो क्यांहे न दीठो रे।
जेम जेम सखियो आवे अधकेरी, तेम तेम दिए रस मीठो रे।। ४ ।।

इस लीला में जो रस है, वह हमने कभी नहीं देखा। इसमें जैसे-जैसे अधिक सखियां आती जाती हैं, वैसे-वैसे यह रस बढ़ता जाता है।

Nijanand App